

१ सिलहामविधिः ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 390 A

नमयि संनिहि गारुव ॥ यव थया ॥ आचार्यस्या म्य हेनार्थ सर्वसत्त्वार्थ काय ॥ ग अ हाम
 हाम स्वमिनि ॥ ॥ पूषा न्या ॥ व
 यजु सेव सिव स्र द्वां डी कू रुट ॥ यध
 शिलक म विधि ॥ ॥ धने ग्राह
 म हू नि ॥ धन का द ॥ वलि विधि
 गाव पूजा या य ॥ गाल ला चक ॥ मरु नि द व रु द्वा य ध म नि य ॥ रुज मान व नि क थं ॥

३

मय ॥ गाव ना ॥ पंच ग व ॥ मरु नि ॥ ॐ आ सर्व द व ना अ धि व रु स्वा हा ॥ ॥ वज्र च
 ला अ नि या क ॥ पंच धा गाल द ला य
 वृद्ध अ कि नि य वज्र व र्ण नी य व द वे य
 रु य ॥ ॐ अ कि नी य रु रुट ॥ ॐ ला
 पी नी य रु रुट ॥ धन पंच वे वा हा
 सा गु हि क धने का डी ला क पू र्ण म य ॥ थ का दि या गु धि व म य ॥ धन वि व जी हा डी ॥

या लावयानाक नमस्तु ॥ मृ. उरु मज्जानकीः सका. रादिरयानकी ॐ. च्यामिहमहानाथम
हामो कृपुर्ववरी ॥ धनमस्तु कने ॥ ॥ सर्वकर्मिकमस्तु ॥ जानिहृत्तगोत्रिखादि ॥
जे. यदीपेदियाविखाविखमहाशुय हव्यकवाहनाय ॥ गज्यानाथयोनाम
काय ॥ रुमानस्य आय आ गी ग्यस फविधिपविपूर्यकामनाथ पूवय २ मिना ७
इतिपुनिकुलाहा ॥ ॥ धनमस्तु ॥ पूवय २ मिना ७
मिहय ॥ विहदकेदय ॥ धनथका लियारु कनाथखा रु यला क गयनामधिग

या अहय ॥ उनेमालगावगविववि वधाय हंरुट ॥ महाकपासनिताय ॥ रुतामक
गकनाय ॥ इष्टाकलालरववाय ॥ सरुसेरु रुताधवायपुण पागिगुवख
दागधव निया ॥ व्यायुवमीजिन वपूषाय ॥ महाधमाधको नाय रु रु रुट
खाहा ॥ पंलाद्यमुति ॥ गीगा रुव विगहन ॥ ॥ धनपंचसगुकाग्
जानिक ॥ धनका डामलुलधिने ॥ किने ॥ पूवय २ मिना ७
न ॥ सचननमहामिहय ॥ दवगप ॥ विगपूजा ॥ दकृष्ण ॥ सिधुनिचक ॥ दणुस

मच्छाय ॥ आच्छिप्तच्छाय ॥ ८ मषाद्रुमि ॥ क्रमापन ॥ विमर्कन ॥ मधुतपातालशुक्राय
॥ महावलिच्छाय ॥ दिग्वलिच्छाय ॥ गलच्छुक्रमालच्छुक्रगीत ॥ ॐ नि
मित्तक्षामविधिसमाप्त ॥ ॥
ॐ

स्वस्तिश्री असंतक्षवाहाया उवमानन्दयागुलफु जू
नसुभम् ॥ ३

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 390 'A'